



अपने लिए समय देने से होती है सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत

महिलाएं बेटा-बेटी को समान मानते हुए शिक्षा और संस्कार दें - मिनाती बेहरा

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज शांतिवन परिसर के डायमण्ड हाल में 'महिला सशक्तिकरण के लिए सकारात्मक परिवर्तन' राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए ओडिशा राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष मिनाती बेहरा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान महिला जागृति के लिए सराहनीय कार्य कर



“ महिला सशक्तिकरण के लिए सकारात्मक परिवर्तन महिला प्रभाग की ओर से पाँच दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन देश भर से भाग लेने पहुंची महिलायें



जब हम खुद को समय देते हैं तो अपनी कमी-कमजोरियों, पसंद-नापसंद खूबियों, विशेषताओं को पहचान पाते हैं। यह ज्ञान मैंने ब्रह्माकुमारीज में सीखा है। संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि परमात्मा ज्ञान देकर

से भरपूर था जो आज खो गया है। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय स्वर्णिम दुनिया की संकल्पना को साकार करने के लिए कार्य कर रहा है। महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. शारदा बहन ने कहा कि हर एक स्वयं का कलाकार, चित्रकार और

आत्मविश्वास ने मुझे दी नई जिंदगी

19 पुस्तकों की लेखिका, अंतर्राष्ट्रीय अवॉर्ड प्राप्त, वर्ल्ड बैंक रिकॉर्ड होल्डर डॉ. परीन सोमानी ने अपने जीवन का अनुभव साझा करते हुए कहा कि वर्ष 2000 में मेरी दोनों आँखों की रोशनी चली गई थी। बाल नहीं बचे थे। आधा चेहरा नहीं बचा। मैं सबकुछ खो चुकी थी। लेकिन मैंने हार नहीं मानी। मैंने संकल्प किया



कि जिंदगी से लड़ूंगी। फिर मैं अपनी आँखों की रोशनी पाने के लिए वैष्णो देवी, गोल्लन

टेम्पल, काबा गई। मेरा मानना है कि ईश्वर हमें कुछ देता नहीं है, वह इंसप्यार करता है। 2010 में कैंसर जब बढ़ गया तो डॉक्टर ने कहा कि आप कुछ दिन के ही मेहमान हो। लेकिन मैं विचलित नहीं हुई। मैंने सोचा कुछ करना है। 2010 में आयुर्वेदिक इलाज कराने के लिये जहाँ डॉक्टर ने बताया कि इसे बचाना

मुश्किल है। इस लड़की की स्पीरिचुअल पावर बहुत है, वही उसे ठीक करेगी। वहाँ से जब मैं वापस लौटी तो ऐसा लगा कि मैं दुर्गा बनकर आ रही हूँ। परमात्म आशीर्वाद, योग, ध्यान और आयुर्वेद की बदौलत मैं फिर से ठीक हो गई। मेरा सभी नारी शक्ति को तीन संदेश है, खुद पर विश्वास करें, अपने जीवन में पवित्रता लाकर परमात्मा को याद करें व अपने मन के कचरे को निकालकर बाबा के बच्चे बनकर यहाँ से जाएं।

रहा है। जब महिलाएं संस्कारी बनेंगी तो समाज संस्कारी बनेगा। महिलाएं बेटा-बेटी को समान मानते हुए शिक्षा और संस्कार दें। समाजसेवा के क्षेत्र में कई राष्ट्रीय

पुरस्कार प्राप्त कर चुकी डॉ. राजश्री गांधी ने कहा कि मातृ शक्ति की संकल्प शक्ति और कर्मठता के बिना कोई प्रगति और विकास संभव नहीं है। तीन लिम्का बुक

ऑफ रिकॉर्ड होल्डर, मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. अदिति सिंघल ने कहा कि अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत अपने लिए समय देने से होती है।



नर को नारायण और नारी को लक्ष्मी समान बनने की शिक्षा दे रहे हैं। इस दुनिया को नई दुनिया बनाकर रामराज्य की स्थापना कर रहे हैं। महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने कहा कि सतयुगी दुनिया में हमारा जीवन गुणों और संस्कारों

मूर्तिकार है। हम अपने विचारों के माध्यम से अपने जीवन को जैसे चाहें वैसा आकार और दिशा दे सकते हैं। ब्र.कु. माला बहन ने भी अपने विचार रखे। संचालन प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका डॉ. ब्र.कु. सविता बहन ने किया।

मानव कल्याण की जिम्मेवारी को बखूबी निभा रहा ब्रह्माकुमारीज संस्थान



ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। बिहार विधानसभा नेता प्रतिपक्ष, विधानसभा पूर्व अध्यक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि जन-सेवाओं, जन-आकांक्षाओं की पूर्ति के साथ मानवता के कल्याण की जिम्मेवारी निभाते हुए सूक्ष्म रूप से युग परिवर्तन का कार्य ब्रह्माकुमारीज संस्थान कर रहा है। इसी धरती पर देवाताओं का वास था। फिर से उस स्वर्णिम संसार की पुनर्स्थापना में भारत राजयोग के माध्यम से अहम भूमिका अदा कर रहा है। वे ब्रह्माकुमारीज संगठन के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में चिकित्सा सेवा प्रभाग द्वारा 'माइंड, बॉडी, मेडिसिन' विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हम कलियुग और सतयुग की बॉर्डर लाईन पर खड़े हैं। 19वीं सदी में स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि 21वीं सदी भारत की होगी। जिसके चलते वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को मूर्तरूप

देने का कार्य भारत कर रहा है। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि मन में उठने वाले विचारों को ईश्वरीय शक्ति के वायब्रेशन

आध्यात्मिक बनाये जाने की अहम आवश्यकता है। दिल्ली से आए डॉ. एम.डी. गुप्ता, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. गीता बहन, मुंबई से आए नशामुक्ति विशेषज्ञ डॉ.

'माइंड, बॉडी, मेडिसिन' चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में देश-विदेश से आये पाँच सौ से अधिक चिकित्सा विशेषज्ञों ने नित नई बढ़ती व्याधियों पर रोकथाम को लेकर किए जा रहे अनुसंधान पर की विस्तारपूर्वक चर्चा

संवाद, ध्यान, योग आदि सत्रों में हुए अनुभवों को चिकित्सकों ने साझा करते हुए राजयोग को जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाने पर बल दिया

मिलने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बना रहता है। प्रभाग के अध्यक्ष, कैंसर सर्जन डॉ. अशोक मेहता ने कहा कि बदलती जीवनशैली से बढ़ रही बीमारियों से बचाव के लिए दिनचर्या को संयमित व

सचिन परब, दिल्ली से आई डॉ. मंजू गुप्ता, डॉ. किरण बाला, विजयनगरम से आई लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ. एम पद्मा कुमारी व पुणे से आए ऑर्थोपेडिक्स इंस्टीट्यूट के डीन व अध्यक्ष डॉ. पराग कांतिलाल संचेती

ने व्याधियों से बचाव को लेकर जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव पर बल दिया। वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. सूर्य भाई, मुम्बई से आए मनोचिकित्सक डॉ. गिरीश पटेल, वाराणसी से आये रोटरी प्रांतपाल डॉ. चंद्रशेखर आर्य, डॉ. वाई. पदमा, ग्लोबल अस्पताल की मुख्य परिचारिका ब्र.कु. रूपा उपाध्याय आदि ने भी विचार व्यक्त किए। **मेडिसिन का कार्य करता है मेडिटेशन** इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शरद अग्रवाल ने कहा कि मेडिटेशन, मेडिसिन की तरह कार्य करता है। जिससे तन और मन दोनों में स्फूर्ति बनी रहती है। पेशेंट को पेशेंस देना चिकित्सकों का धर्म है।

जैसी सोच वैसा स्वास्थ्य इंदौर से आए रिसर्च इनोवेशन स्टार्टअप यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. विजय कुमार सालविया ने कहा कि जैसी सोच होती है उसी अनुसार स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। निरंतर खुश रहने से अधिकतम बीमारियां अपने आप ही किनारा कर लेती हैं। ग्लोबल अस्पताल निदेशक डॉ. प्रताप मिश्रा ने अस्पताल द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने तीन दिन तक चलने वाले सम्मेलन की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। प्रभाग की अधिशासी सदस्या ब्र.कु. मोनिका गुप्ता ने मंच का संचालन किया।

बीमारियों को आमंत्रित करते हैं नकारात्मक विचार

अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि अधिकतर व्याधियों की उत्पत्ति मानव अपने कमजोर मन से करता है। नकारात्मक संकल्प बीमारियों को आमंत्रित करते हैं। सकारात्मक सोच व दृष्टिकोण से मन में अलौकिक ऊर्जा की रचना बढ़ती है। उन्होंने कहा कि इस संसार के विचारों की दुनिया से परे निर्विचार की दुनिया की अनुभूति करने से कर्मक्षेत्र के हर कर्म यथार्थ होने लगेगे। वसुधैव कुटुम्बकम की इच्छाओं को मन में स्थान देने से विश्वकल्याण की भावनाओं को मूर्तरूप दिया जा सकता है। मन को कलुषित करने वाली आदतों व संस्कारों के प्रभाव से शारीरिक व्याधियों को बल मिलता है। इसलिए मन को उन आदतों से किनारा करने के लिए ईश्वरीय चिन्तन की नई आदतों को प्राथमिकता देनी होगी।

